संज्ञानात्मक विकास (**Cognitive Development**) का सरल अर्थ है—बच्चे के **सोचने, समझने, सीखने और याद रखने की क्षमता** का विकास। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक बच्चा सूचनाओं को ग्रहण करता है, उन्हें संसाधित (Process) करता है और फिर दुनिया के प्रति अपनी समझ बनाता है। इसे अक्सर "मानसिक विकास" भी कहा जाता है। आइए इसे विस्तार से समझते हैं:

संज्ञानात्मक विकास का मुख्य अर्थ (Core Meaning)

जन्म के समय एक शिशु का मस्तिष्क पूरी तरह विकसित नहीं होता। जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, उसके मस्तिष्क में न्यूरॉन्स के बीच संबंध बनते हैं। संज्ञानात्मक विकास में निम्नलिखित मानसिक प्रक्रियाएं शामिल हैं:

- **तर्क करना (Reasoning):** "ऐसा क्यों हो रहा है?" यह समझने की क्षमता।
- **स्मृति (Memory):** जानकारी को याद रखना और जरूरत पड़ने पर उसे दोहराना।
- **भाषा विकास (Language):** शब्दों और संकेतों के माध्यम से संवाद करना।
- **समस्या समाधान (Problem Solving):** किसी बाधा को दूर करने के लिए रास्ते खोजना।
- **ध्यान (Attention):** किसी एक वस्तु या कार्य पर ध्यान केंद्रित करना।

संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) के सिद्धांतों का उद्देश्य यह समझना है कि बच्चे कैसे सोचते हैं, वे जानकारी को कैसे संसाधित (Process) करते हैं और समय के साथ उनकी समझ कैसे विकसित होती है।
मनोविज्ञान में इसके तीन सबसे प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

---

1. जीन पियाजे का सिद्धांत (Piaget's Theory)

पियाजे को "विकासात्मक मनोविज्ञान का जनक" माना जाता है। उनका मानना था कि बच्चे **"नन्हे वैज्ञानिक"** होते हैं जो अपने अनुभवों के आधार पर दुनिया की अपनी समझ खुद बनाते हैं।
पियाजे ने विकास की चार अवस्थाएँ बताई हैं:

- **Sensorimotor (0-2 वर्ष):** बच्चा इंद्रियों और क्रियाओं (पकड़ना, चूसना) के माध्यम से सीखता है।
- **Pre-operational (2-7 वर्ष):** भाषा का विकास होता है और बच्चा प्रतीकात्मक खेल (Role play) करता है, लेकिन वह अभी भी अहंकारी (Egocentric) होता है।

- **Concrete Operational (7-11 वर्ष):** बच्चा ठोस वस्तुओं के बारे में तार्किक रूप से सोचने लगता है (जैसे यह समझना कि बर्तन बदलने से पानी की मात्रा नहीं बदलती)।
- **Formal Operational (11+ वर्ष):** बच्चा अमूर्त (Abstract) अवधारणाओं और भविष्य की संभावनाओं के बारे में सोच सकता है।

---

2. लेव वायगोत्स्की का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत (Vygotsky's Socio-Cultural Theory)

वायगोत्स्की का मानना था कि संज्ञानात्मक विकास सामाजिक बातचीत और संस्कृति पर निर्भर करता है। पियाजे के विपरीत, वायगोत्स्की ने कहा कि **"सीखना विकास से पहले होता है।"**
इनके सिद्धांत के दो मुख्य भाग हैं:

- **ZPD (Zone of Proximal Development):** यह वह अंतर है जो बच्चा खुद से कर सकता है और जो वह किसी कुशल व्यक्ति (शिक्षक या माता-पिता) की मदद से कर सकता है।
- **Scaffolding (स्कैफोल्डिंग):** वह अस्थायी सहायता जो एक वयस्क बच्चे को तब देता है जब वह कुछ नया सीख रहा होता है। जैसे बच्चे को साइकिल चलाना सिखाते समय पीछे से पकड़ना।

---

3. सूचना प्रसंस्करण सिद्धांत (Information Processing Theory)

यह सिद्धांत किसी एक वैज्ञानिक का नहीं है, बल्कि यह मानव मस्तिष्क की तुलना एक **कंप्यूटर** से करता है। यह इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि बच्चा जानकारी को कैसे "Input" करता है और उसे "Output" में कैसे बदलता है।
इसके मुख्य घटक हैं:

- **Attention (ध्यान):** जानकारी को ग्रहण करना।
- **Memory (स्मृति):** जानकारी को अल्पकालिक (Short-term) से दीर्घकालिक (Long-term) स्मृति में ले जाना।
- **Executive Function:** जटिल कार्यों को करने के लिए योजना बनाना और निर्णय लेना।

यह सिद्धांत हमें क्या सिखाते हैं?

- **पियाजे** हमें बताते हैं कि बच्चे को उसकी आयु के अनुसार "तैयार" (Readiness) होने पर ही कुछ सिखाना चाहिए।
- **वायगोत्स्की** हमें बताते हैं कि सामूहिक चर्चा और गुरु का मार्गदर्शन विकास को गति देता है।
- **सूचना प्रसंस्करण** हमें बताता है कि बच्चे को बहुत अधिक जानकारी एक साथ नहीं देनी चाहिए ताकि उसकी स्मृति पर बोझ न पड़े।